



NEERAJ®

हिंदी साहित्य का इतिहास

B.H.D.C.-131

B.A. General - 1st Semester

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain M.A. (Hindi), B.Ed.



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी साहित्य का इतिहास

| | |
|--|-----|
| Question Paper—June-2023 (Solved) | 1 |
| Question Paper—December-2022 (Solved) | 1-2 |
| Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) | 1-3 |
| Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) | 1-2 |
| Sample Question Paper-1 (Solved) | 1 |

| <i>S.No.</i> | <i>Chapterwise Reference Book</i> | <i>Page</i> |
|--------------|--|-------------|
| 1. | काल-विभाजन और नामकरण | 1 |
| 2. | आदिकालीन काव्यधाराएँ | 14 |
| 3. | भक्ति आंदोलन : परिस्थितियाँ और सामान्य विशेषताएँ | 24 |
| 4. | संत काव्यधारा | 38 |
| 5. | सूफी काव्यधारा | 50 |
| 6. | कृष्णभक्ति काव्यधारा | 61 |
| 7. | रामभक्ति काव्यधारा | 72 |
| 8. | रीतिकार्य : परिस्थितियाँ और प्रवृत्तियाँ | 82 |

| <i>S.No.</i> | <i>Chapterwise Reference Book</i> | <i>Page</i> |
|--------------|-----------------------------------|-------------|
| 9. | रीतिकाव्य के प्रमुख कवि | 92 |
| 10. | भारतेंदु युग | 101 |
| 11. | द्विवेदी युग | 110 |
| 12. | हिंदी कहानी का विकास-I | 117 |
| 13. | हिंदी कहानी का विकास-II | 123 |
| 14. | हिंदी उपन्यास का विकास-I | 132 |
| 15. | हिंदी उपन्यास का विकास-II | 140 |
| 16. | हिंदी नाटक का विकास | 151 |
| 17. | हिंदी निबंध का विकास | 160 |



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास

B.H.D.C.-131

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. आधुनिक युग के विभिन्न कालखण्डों का समुचित परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, 'आधुनिक युग के विभिन्न कालखंड और उनका नामकरण'

प्रश्न 2. भक्ति आन्दोलन की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-26, 'भक्ति आंदोलन : विविध परिस्थितियां'

प्रश्न 3. 'सूफी काव्यधारा' पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-50, 'सूफी काव्य, सूफीमत और सिद्धांत', पृष्ठ-51, 'सूफी प्रेमकाव्य परंपरा'

प्रश्न 4. राम-काव्य परम्परा के विकास को रेखांकित कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-72, 'रामभक्ति साहित्य का विकास'

प्रश्न 5. प्रमुख रीतिबद्ध कवियों के योगदान की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-92, 'रीतिबद्ध कवि'

प्रश्न 6. भारतेन्दु-युगीन हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-101, 'भारतेन्दुयुगीन हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि'

प्रश्न 7. द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-111, 'द्विवेदी युगीन साहित्यकार', पृष्ठ-112, 'पद्य साहित्य'

प्रश्न 8. प्रेमचंद और प्रेमचंदोत्तरयुगीन हिन्दी कहानी के विकास को रेखांकित कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ-118, 'प्रेमचंद युग', 'प्रेमचंदोत्तर युग'

प्रश्न 9. हिंदी उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-15, पृष्ठ-142, 'हिंदी उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियां'

प्रश्न 10. 'प्रसादोत्तर हिंदी नाटक' विषय पर निबंध लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-16, पृष्ठ-152, 'नाटक के अन्य रूप', पृष्ठ-159, 'प्रसादोत्तर युगीन नाटक'

■ ■

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास

B.H.D.C.-131

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. हिंदी साहित्य के काल-विभाजन के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-11, प्रश्न-10

प्रश्न 2. आदिकाल की विभिन्न काव्यधाराओं का परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-15, 'काव्य धाराएं'

प्रश्न 3. भक्तिकाव्य की सामान्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-27, 'भक्तिकाव्य की सामान्य विशेषताएं'

प्रश्न 4. संतकाव्य के भावपक्ष को रेखांकित कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-40, 'निर्गुण संतकाव्य का भावपक्ष'

प्रश्न 5. भारतेन्दु युग के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-105, प्रश्न-4, पृष्ठ-106, प्रश्न-6

प्रश्न 6. प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ-118, 'प्रेमचंद युग से पूर्व की हिंदी कहानी', पृष्ठ-120, प्रश्न-5, पृष्ठ-121, प्रश्न-1

प्रश्न 7. समकालीन हिंदी काव्य के विकास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-समकालीन कविता, आधुनिक हिंदी कविता के विकास में वर्तमान काव्यान्दोलन है। समकालीन कविता का आरम्भ 1962-64 से माना जाता है। साठोतरी कविता और समकालीन कविता को एक मान लेना उचित नहीं है। समकालीन कविता, आधुनिक कविता के विकास में नई चेतना, नयी भाव-भूमि, नई संवेदना तथा नए शिल्प के बदलाव की सूचक काव्यधारा है। इस काव्य धारा का लक्ष्य आम-आदमी और समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत करना है।

मुक्तिबोध, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, कुमारेंद्र, आलोक धन्वा, श्रीराम तिवारी, धूमिल, शलभ श्रीराम सिंह, कुमार विकल, विजेंद्र, पंकज सिंह, निर्मल वर्मा, आनंद प्रकाश, चंचल चौहान, शशि प्रकाश आदि समकालीन कविता के प्रमुख कवि हैं।

समकालीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियां एवं विशेषताएं-

1. समकालीन आर्थिक एवं सामाजिक चेतना का उद्घाटन-इस कविता के कवियों ने समकालीन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रश्नों का यथार्थ वर्णन किया है। बच्चन, दिनकर तथा अज्ञेय के समान ये कवि ऊंचे पदों के लिए लालायित नहीं हैं। ये कवि अपने आसपास के अनुभवों को कविता में स्थान देते हैं। धूमिल एक स्थल पर काव्य-रचना पर ही प्रश्नचिह्न लगाते हुए कहते हैं-

“कविता में जाने से पहले

मैं आपसे पूछता हूँ

जब इससे न चोली बन सकती है

न चोंगा

तब आप कहो

इस ससुरी कविता को

जंगल से जनता तक

ढोने से क्या होगा?”

इसके अलावा नागार्जुन ने भी अपनी कविताओं में हमेशा आर्थिक विषमताओं और सामाजिक भिन्नताओं को रेखांकित किया तथा “अकाल और उसके बाद” जैसी कविता भी लिखी।

2. राजनीतिक चेतना का उद्घाटन-सन 1947 में हम स्वतंत्र हुए, तब से लेकर आज तक अनेक आम-चुनाव हुए। राजनीतिक दलों ने 'गरीबी-हटाओ' के अनेक नारे दिए। कुछ छुटपुट उपलब्धियों के अतिरिक्त आम-आदमी को भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, प्रदूषण तथा आतंकवाद के सिवाय कुछ नहीं मिला। लोगों का उत्साह और आशा मंद होने लगी। इतने अधिक वर्षों में राजनीतिक जीवन का घोर नैतिक पतन हुआ। अमीर अमीर होता

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

हिंदी साहित्य का इतिहास

1

काल-विभाजन और नामकरण

परिचय

हिन्दी-साहित्य के इतिहास के अध्ययन की सुविधा के लिए कुछ विद्वानों ने इसे कुछ विशिष्ट कालखंडों में विभाजित किया है। काल-विभाजन से साहित्य की मुख्य धाराओं के विषय-बोध में वैज्ञानिकता और सैद्धान्तिक गम्भीरता का पुट आ जाता है। सामान्यतः किसी भी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन कृति, कर्ता, पद्धति या शैली तथा विषय के आधार पर किया जाता है। जब किसी काल में प्रवृत्ति का मुख्य आधार नहीं मिलता, तो उस युग के सबसे अधिक महत्वपूर्ण साहित्यकार के नाम से उस सम्पूर्ण कालखंड की साहित्यिक विशेषताओं को जानने का प्रयास किया जाता है। काल-विभाजन के लिए यदि कोई विशिष्ट आधार नहीं मिलता, तब समग्र काल को आदि, मध्य और आधुनिक काल में विभाजित कर लिया जाता है। वर्तमान समय में काल-विभाजन का यह रूप पर्याप्त प्रचलित है, परन्तु यह वैज्ञानिक कसौटी पर खरा नहीं उतरता। वस्तुतः हिन्दी साहित्य के इतिहास के अध्ययन के लिए प्रवृत्तियों पर आधारित काल-विभाजन को ही अधिक उचित कहा जा सकता है; जैसे-भक्तिकाल, रीतिकाल आदि।

अध्याय का विहंगावलोकन

काल-विभाजन और नामकरण की आवश्यकता

साहित्य नदी के प्रवाह की तरह होता है, जो निरंतर आगे बढ़ता है। उसमें न कोई रुकावट आती है और न ही कोई उसे भंग करता है। हाँ समय के साथ साथ उसमें परिवर्तन आते रहते हैं और परिवर्तन के अनुरूप साहित्य को नयी प्रवृत्तियाँ, नयी दिशाएँ मिलती हैं।

किसी भी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन करने की सर्वाधिक उपयुक्त प्रणाली उस साहित्य में प्रवाहित साहित्य धाराओं एवं विविध प्रवृत्तियों के आधार पर उसे विभाजित करना है। युग की परिस्थितियों के अनुकूल साहित्य की विषय तथा शैलीगत प्रवृत्तियाँ परिवर्तित होती रहती हैं। हिन्दी साहित्य के विषय में भी

यही बात युक्तियुक्त प्रतीत होती है। एक विशेष काल में समाज की विशेष परिस्थितियाँ एवं तत्सम्बन्धी विचारधाराएँ रही हैं और उन्हीं के अनुरूप साहित्यिक रचनाएँ प्रस्तुत हुई हैं। अपवाद अवश्य रहे, परन्तु गौण प्रवृत्ति के रूप में। काल-विभाजन करते समय स्वयं आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने विभाजन के आधार के सम्बन्ध में अपना मत स्पष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा, “जब प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।”

काल-विभाजन और नामकरण का आधार

काल-विभाजन और नामकरण का उद्देश्य इतिहास की विभिन्न परिस्थितियों के संदर्भ में प्रवृत्तियों के विकासक्रम को स्पष्ट करना है। साहित्य की अंतर्निहित चेतना के क्रमिक विकास, परंपराओं के उत्थान-पतन और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों को स्पष्ट करना ही काल-विभाजन और नामकरण का उद्देश्य है।

साहित्य का विकास समाज के बीच होता है। समाज में बड़ा परिवर्तन आने पर साहित्य पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। आजादी से पूर्व जिस तरह के साहित्य की रचना और आजादी के बाद की बदली हुई परिस्थिति में अंतर था। साहित्येतिहास का कालविभाजन और नामकरण सामाजिक-राजनीतिक इतिहास से प्रभावित होता है, पर उसका अनुचर नहीं होता। जब हिंदी साहित्य का आदिकाल था, भारतीय इतिहास में वह मध्यकाल था अर्थात् साहित्य के इतिहास और राजनीति के इतिहास में द्वंद्व भी है और उनका अपना-अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी है। उदाहरणस्वरूप, रीतिकालीन साहित्य तद्युगीन रजवाड़ों की राजनीतिक-सांस्कृतिक मानसिकता का परिचय देती है, पर आदिकालीन सिद्ध-नाथों की रचनाओं में राजनीति की अपेक्षा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक ज्यादा क्रियाशील हैं। भक्तियुग के उत्थान को लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद

2 / NEERAJ : हिंदी साहित्य का इतिहास

द्विवेदी के बीच विवाद हुआ। आचार्य शुक्ल ने पश्चिमोत्तर से हुए आक्रमण को भक्ति के उत्थान का प्रमुख कारक माना, जबकि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसे 'भारतीय परंपरा का स्वाभाविक विकास' कहा। साहित्य के काल-विभाजन के लिए केवल राजनीतिक इतिहास के काल-विभाजन को स्थूल रूप से आधार नहीं बनाया जा सकता। राजनीतिक अथवा सामाजिक इतिहास का सहारा साहित्य की मूल चेतना को प्रभावित करने तक ही लेना चाहिए। किसी भी ऐतिहासिक दौर में जो राजनीतिक-सांस्कृतिक-आर्थिक गतिविधियाँ चल रही होती हैं, साहित्य उनके विरोधाभासों को भी देखता है। साहित्य के काल-विभाजन और नामकरण का आधार साहित्यिक प्रवृत्ति और चेतना होनी चाहिए। प्रवृत्तियों को राजनीतिक-सामाजिक इतिहास से संबद्ध करके देखने पर प्रवृत्तियों में बदलाव के कारण की जानकारी मिलती है।

साहित्य की प्रवृत्ति के निर्माण और बदलाव के लिए विभिन्न तत्व जिम्मेदार होते हैं। अलग-अलग समय में अलग-अलग कारण प्रवृत्ति-विशेष के उन्मेष के पीछे सक्रिय रहे हैं। अतः काल-विभाजन और नामकरण का भी कोई रूढ़ आधार न होकर अलग-अलग समय में अलग-अलग परिस्थितियाँ निर्णायक होती हैं। कभी प्रवृत्ति विशेष प्रधान होती है, तो कभी सांस्कृतिक चेतना। रीतिकाल में काव्य-रचना की प्रवृत्ति विशेष रीति अपने समय में हावी हो गई थी, जबकि भक्तिकाल में 'भक्ति' एक सांस्कृतिक चेतना के रूप में प्रभावशाली थी। 14वीं सदी से 17वीं सदी तक 'भक्ति' की सांस्कृतिक चेतना ने समाज पर व्यापक प्रभाव डाला। भक्तिकाल की हर धारा ने पारंपरिक जड़ता और सामंती मूल्यों के प्रति प्रतिरोधी चेतना विकसित की। भक्ति के माध्यम से समाज-सुधार, प्रेम-भाईचारे का आह्वान, लोक-जीवन की प्रतिष्ठा के प्रयास हुए। इस कारण इस पूरे युग को 'भक्तिकाल' की संज्ञा से नवाजा गया। किसी समय विशेष में किसी खास व्यक्ति का हस्तक्षेप इतना महत्वपूर्ण और युगांतकारी होने पर उसका प्रभाव उस दौर की समस्त साहित्यिक गतिविधियों में देखने को मिलता है, ऐसे दृष्टांतों में युग का नामकरण व्यक्ति के नामों पर भी किया गया है। हिंदी साहित्य में 'भारतेंदु युग', द्विवेदी युग' और 'प्रेमचंद युग' आदि ऐसे ही उदाहरण हैं।

हिंदी साहित्य के काल-विभाजन की समस्या

इस बात का निर्णय करना कठिन है कि हिंदी साहित्य का इतिहास कब से आरंभ होता है। जार्ज ग्रियर्सन ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिंदी साहित्य का आरंभ सातवीं शताब्दी से माना है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत है कि पुरानी हिंदी का जन्म तो सातवीं शताब्दी के आसपास हो गया था तथा उसमें सिद्धों, जैनियों और नाथपंथियों ने काव्य भी लिखा था, पर उनके काव्य में अपने-अपने धर्म-संप्रदाय की शिक्षाएँ दी गई हैं, इसीलिए उनमें काव्य के गुण कम मिलते हैं। आचार्य शुक्ल इन कवियों के काव्य को कोरी 'सांप्रदायिक शिक्षा' मानकर उसे काव्य स्वीकार नहीं करते। उनके

अनुसार हिंदी का वास्तविक काव्य विक्रमी संवत् 1050 (993 ई.) के बाद से लिखा गया। इस प्रकार आचार्य शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास का आरंभ संवत् 1050 या 993 ई. से माना। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य का आरंभ दसवीं शताब्दी से मानते हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा और डॉ. नगेंद्र इसका आरंभ सातवीं शताब्दी से मानते हैं।

हिंदी साहित्य के आरंभ संबंधी एक समस्या हिंदी भाषा और अपभ्रंश भाषा के पारस्परिक संबंध की है। भाषा विज्ञान के विद्वान प्राकृत भाषा से अपभ्रंश भाषा का और अपभ्रंश भाषा से आधुनिक भारतीय भाषाओं, जिनमें हिंदी भी एक है, का विकास मानते हैं। इस दृष्टि से अपभ्रंश भाषा हिंदी का प्रारंभिक रूप है, परंतु कुछ विद्वान अपभ्रंश को हिंदी का ही एक रूप मानते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपभ्रंश को 'प्राकृताभास हिंदी' नाम दिया, तो राहुल सांकृत्यायन ने अपभ्रंश को 'पुरानी हिंदी' की संज्ञा देते हुए अपभ्रंश के सारे कवियों को हिंदी के कवियों के रूप में स्वीकार किया। इस तरह राहुल सांकृत्यायन का मत स्वीकारने से हिंदी साहित्य का आरंभ सातवीं शताब्दी से ही माना जाएगा और उस स्थिति में अपभ्रंश के सबसे पहले कवि सरहपाद को ही हिंदी का पहला कवि कहा जाएगा। डॉ. नगेंद्र द्वारा संपादित इतिहास में भी सरहपाद को हिंदी का पहला कवि माना गया है।

इस प्रकार हिंदी विद्वानों के मुख्यतः दो वर्ग हैं—

1. एक वर्ग के विद्वान हिंदी और अपभ्रंश को एक मानते हुए हिंदी का आरंभ सातवीं शताब्दी से स्वीकार करते हैं।
2. दूसरे वर्ग के विद्वान अपभ्रंश को हिंदी से अलग मानते हुए दसवीं शताब्दी के बाद से हिंदी साहित्य का आरंभ मानते हैं।

अब इस बात का निर्णय हो गया है कि अपभ्रंश और हिंदी दोनों एक भाषा नहीं हैं। अपभ्रंश हिंदी के पूर्व की भाषा है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी हिंदी और अपभ्रंश को अलग माना है, अस्तु अब भाषा विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र के प्रायः सभी विद्वानों ने स्वीकार कर लिया है कि अपभ्रंश और हिंदी अलग-अलग भाषाएँ हैं।

हिंदी साहित्य के काल-विभाजन के विभिन्न प्रयास

हिन्दी-साहित्य के प्रारम्भिक इतिहासकारों—गार्सा द तासी तथा शिवसिंह सेंगर ने काल-विभाजन की ओर ध्यान नहीं दिया। सर्वप्रथम, जॉर्ज ग्रियर्सन ने अव्यवस्थित ढंग से हिन्दी-साहित्य के इतिहास को कालक्रम देने का प्रयास किया था। ग्रियर्सन ने चारण काल, पन्द्रहवीं सदी का धार्मिक पुनर्जागरण, जायसी की प्रेम कविता, ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय, मुगल दरबार, तुलसीदास, रीति-काव्य, अठारहवीं शताब्दी, कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान आदि शीर्षकों में साहित्य का काल-विभाजन किया। हमारे दृष्टिकोण से इसे काल-विभाजन कहना उचित नहीं है। वास्तव में ये विभिन्न अध्यायों के केवल शीर्षक मात्र हैं। इनमें कालक्रम की निरन्तरता भी नहीं है। इसके पश्चात् मिश्र बन्धुओं ने हिन्दी-साहित्य

का काल-विभाजन किया। उनके द्वारा प्रस्तुत काल-विभाजन निम्नलिखित है-

1. आरम्भिक काल (क) पूर्वारम्भिक काल (700 से 1343 वि.)
(ख) उत्तरारम्भिक काल (1344 से 1444 वि.)
2. माध्यमिक काल (क) पूर्व माध्यमिक काल (1445 से 1560 वि.)
(ख) प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561 से 1680 वि.)
3. अलंकृत काल (क) पूर्वालंकृत काल (1681 से 1790 वि.)
(ख) उत्तरालंकृत काल (1791 से 1889 वि.)
4. परिवर्तन काल (1890 से 1925 वि.)
5. वर्तमान काल (1926 वि. से आज तक)

डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन में हिन्दी-साहित्य का काल-विभाजन इस प्रकार किया है-

1. सन्धि-काल-सं. 750; से प्रारम्भ इसमें अपभ्रंश और जन-भाषा की सन्धि में विविध धार्मिक सम्प्रदायों का प्रवर्तन हुआ।
2. चारण-काल-प्रारम्भ सं. 1000; इसमें चारणों ने स्वदेशाभिमानी नरेशों की प्रशस्तियाँ लिखी हैं।
3. प्रेम कथा या लोक कथा-काल-इस काल में आदर्श प्रेम की लोकरंजनकारिणी कथाएँ लिखी गईं।
4. भक्ति-काल-प्रारम्भ संवत् 1300; इसमें अध्यात्मवाद के देशव्यापी आन्दोलन और उसकी शाखा-प्रशाखाओं का साहित्य है।
5. कला-काल-प्रारम्भ संवत् 1700; भक्ति का शृंगार भाव में परिवर्तित होना।
6. प्रबुद्ध-काल-प्रारम्भ संवत् 1900; ज्ञान के विविध क्षेत्रों में विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति का जागृत होना, जीवन से सम्बद्ध समस्त विषयों पर साहित्य सृजन।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी-साहित्य के इतिहास में सम्पूर्ण हिन्दी-साहित्य को चार कालों में विभाजित किया है-

1. आदिकाल (वीरगाथा काल, संवत् 1050 से 1375 वि.)
2. पूर्व-मध्यकाल (भक्तिकाल, संवत् 1375 से 1700 वि.)
3. उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल, संवत् 1700 से 1900 वि.)
4. आधुनिक काल (गद्यकाल, संवत् 1900 से अब तक)

शुक्ल जी के सामने साहित्य की जो सामग्री उपलब्ध थी, उसके आधार पर ही उन्होंने काल-विभाजन किया है। वर्तमान युग में साहित्य के क्षेत्र में हुए अनुसंधान को देखते हुए काल-विभाजन के आधार तथा स्वरूप में परिवर्तन अपेक्षित है, परन्तु जब तक विद्वानों द्वारा काल-विभाजन में नई दिशाओं का संकेत नहीं दिया जाता, तब तक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा प्रतिपादित काल-विभाजन को ही हिन्दी-साहित्य के इतिहास के अध्ययन का आधार माना जा सकता है।

नामकरण संबंधी विभिन्न मत आदिकाल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल का नाम वीरगाथा काल रखा है। राजाश्रित कवि अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरितों या गाथाओं का वर्णन करते थे। यही प्रबंध परंपरा रासो के नाम से पायी जाती है, जिसे लक्ष्य करके इस काल को हमने वीरगाथा काल कहा है। इसके संदर्भ में वे तीन कारण बताते हैं-

1. इस काल की प्रधान प्रवृत्ति वीरता की थी अर्थात् इस काल में वीरगाथात्मक ग्रंथों की प्रधानता रही है।
2. अन्य जो ग्रंथ प्राप्त होते हैं, वे जैन धर्म से संबंध रखते हैं, इसलिए नाममात्र हैं।
3. इस काल के फुटकर दोहे प्राप्त होते हैं, जो साहित्यिक हैं तथा विभिन्न विषयों से संबंधित हैं, किन्तु उसके आधार पर भी इस काल की कोई विशेष प्रवृत्ति निर्धारित नहीं होती है।

शुक्ल जी द्वारा किये गये वीरगाथाकाल नामकरण के संबंध में कई विद्वानों ने अपना विरोध व्यक्त किया है। इनमें श्री मोतीलाल मैनारिया, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि मुख्य हैं। आचार्य द्विवेदी का कहना है कि वीरगाथा काल की महत्वपूर्ण रचना पृथ्वीराज रासो की रचना उस काल में नहीं हुई थी और यह एक अर्ध-प्रामाणिक रचना है। यही नहीं शुक्ल ने जिन ग्रंथों के आधार पर इस काल का नामकरण किया है, उनमें से कई रचनाओं का वीरता से कोई संबंध नहीं है, जैसे-बीसलदेव रासो गीति रचना है। जयचंद्र प्रकाश तथा जयमयंक जस चंद्रिका-इन दोनों का वीरता से कोई संबंध नहीं है। ये ग्रंथ केवल सूचना मात्र हैं। अमीर खुसरो की पहलियों का भी वीरत्व से कोई संबंध नहीं है। विजयपाल रासो का समय मिश्रबंधुओं ने सं. 1355 माना है, अतः इसका भी वीरता से कोई संबंध नहीं है। परमाल रासो पृथ्वीराज रासो की तरह अर्ध प्रामाणिक रचना है तथा इस ग्रंथ का मूल रूप प्राप्य नहीं है। कीर्तिलता और कीर्तिपताका-इन दोनों ग्रंथों की रचना विद्यापति ने अपने आश्रयदाता राजा कीर्तिसिंह की कीर्ति के गुणगान के लिए लिखे थे। उनका वीररस से कोई संबंध नहीं है। विद्यापति की पदावली का विषय राधा तथा अन्य गोपियों से कृष्ण की प्रेम-लीला है। इस प्रकार शुक्ल जी ने जिन आधार पर इस काल का नामकरण वीरगाथा काल किया है, वह योग्य नहीं है।

4 / NEERAJ : हिंदी साहित्य का इतिहास

डॉ. ग्रियर्सन ने हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रथम काल को चारणकाल नाम दिया है, पर इस नाम के पक्ष में वे कोई ठोस तर्क नहीं दे पाये हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रारंभ 643 ई. से माना है, किन्तु उस समय की किसी चारण रचना या प्रवृत्ति का उल्लेख उन्होंने नहीं किया है। वस्तुतः इस प्रकार की रचनाएँ 1000 ई.स. तक मिलती ही नहीं हैं, इसलिए डॉ. ग्रियर्सन द्वारा दिया गया नाम योग्य नहीं है।

मिश्रबंधुओं ने ई.स. 643 से 1387 तक के काल को प्रारंभिक काल कहा है। यह एक सामान्य नाम है और इसमें किसी प्रवृत्ति को आधार नहीं बनाया गया है। यह नाम भी विद्वानों को स्वीकार्य नहीं है।

राहुल सांकृत्यायन ने 8वीं से 13 वीं शताब्दी तक के काल को सिद्ध-सामंत युग की रचनाएँ माना है। उनके मतानुसार उस समय के काव्य में दो प्रवृत्तियों की प्रमुखता मिलती है—

1. **सिद्धों की वाणी**—इसके अंतर्गत बौद्ध तथा नाथ-सिद्धों की तथा जैनमुनियों की उपदेशमूलक तथा हठयोग की क्रिया का विस्तार से प्रचार करनेवाली रहस्यमूलक रचनाएँ आती हैं।

2. **सामंतों की स्तुति**—इसके अंतर्गत चारण कवियों के चरित काव्य (रासो ग्रंथ) आते हैं, जिनमें कवियों ने अपने आश्रयदाता राजा एवं सामंतों की स्तुति के लिए युद्ध, विवाह आदि के प्रसंगों का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है। इन ग्रंथों में वीरत्व का नवीन स्वर मुखरित हुआ है। राहुल जी का यह मत भी विद्वानों द्वारा मान्य नहीं है, क्योंकि इस नामकरण से लौकिक रस का उल्लेख करनेवाली किसी विशेष रचना का प्रमाण नहीं मिलता। नाथपंथी तथा हठयोगी कवियों तथा खुसरो आदि की काव्य-प्रवृत्तियों का इस नाम में समावेश नहीं होता है।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के प्रथम काल का नाम बीजवपन काल रखा। उनका यह नाम योग्य नहीं है, क्योंकि साहित्यिक प्रवृत्तियों की दृष्टि से यह काल आदिकाल नहीं है। यह काल तो पूर्ववर्ती परिनिष्ठित अपभ्रंश की साहित्यिक प्रवृत्तियों का विकास है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रारंभिक काल को आदिकाल नाम दिया है। विद्वान भी इस नाम को अधिक उपयुक्त मानते हैं। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है—वस्तुतः हिंदी का आदि काल शब्द एक प्रकार की भ्रामक धारणा की सृष्टि करता है और श्रोता के चित्त में यह भाव पैदा करता है कि यह काल कोई आदिम, मनोभावापन्न, परंपराविनिर्मुक्त, काव्य-रूढ़ियों से अछूते साहित्य का काल है। यह ठीक नहीं है। यह काल बहुत अधिक परंपरा-प्रेमी, रूढ़िग्रस्त, सजग और सचेत कवियों का काल है। आदिकाल नाम ही अधिक योग्य है, क्योंकि साहित्य की दृष्टि से यह काल अपभ्रंश काल का विकास ही है, पर भाषा की दृष्टि से यह परिनिष्ठित अपभ्रंश से आगे बढ़ी हुई भाषा की सूचना देता

है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के आदिकाल के लक्षण-निरूपण के लिए निम्नलिखित पुस्तकें आधारभूत बतायी हैं—

1. पृथ्वीराज रासो, 2. परमाल रासो, 3. विद्यापति की पदावली, 4. कीर्तिलता, 5. कीर्तिपताका, 6. संदेशरासक (अब्दुल रेहमान), 7. पउमचरिउ (स्वयंभू कृत रामायण), 8. भविष्यत्कहा (धनपाल), 9. परमात्म-प्रकाश (जोइन्दु), 10. बौद्ध गान और दोहा (संपादक पं. हरप्रसाद शास्त्री), 11. स्वयंभू छंद और 12. प्राकृत पैंगल।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रथम काल के नामकरण के रूप में आदिकाल नाम ही योग्य व सार्थक है, क्योंकि इस नाम से उस व्यापक पुष्टभूमि का बोध होता है, जिस पर परवर्ती साहित्य खड़ा है।

भक्तिकाल

चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक (1318 ई. से 1643 ई.) का कालखंड हिंदी साहित्य के इतिहास में 'भक्तिकाल' को कहा जाता है। इस काल खंड के नामकरण का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को है। कुछ विद्वान इसे पूर्व मध्यकाल भी कहते हैं। हिंदी साहित्येतिहास लेखन में ये दोनों नाम एक साथ चलते हैं, पर 'भक्तिकाल' नाम को अधिक मान्यता मिली है, क्योंकि अगर आदिकाल के समान इस काल में भी कोई प्रवृत्ति न होती, तो 'पूर्व मध्यकाल' नाम से काम चलाया जा सकता था, पर इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति 'भक्त स्पष्ट होने के कारण यह नाम प्रासंगिक है।

रीतिकाल

हिंदी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण में आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा तत्कालीन युगीन प्रवृत्तियों को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है। विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रमुखता के आधार पर ही उन्होंने साहित्य के अलग-अलग कालखण्डों का नामकरण किया है। इसी मापदंड को अपनाते हुए हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल अर्थात् 1700-1900 वि. के कालखण्ड में रीति तत्त्व की प्रधानता होने के कारण शुक्ल जी ने इस कालखण्ड को 'रीति काल' नाम दिया।

इस समय अवधि में अधिकांश कवियों द्वारा काव्यांगों के लक्षण एवं उदाहरण देने वाले ग्रंथों की रचना की गई। अनेक हिंदी कवियों द्वारा आचार्यत्व की शैली अपनाते हुए लक्षण ग्रंथों की परिपाटी पर अलंकार, रस, नायिका भेद आदि काव्यांगों का विस्तृत विवेचन किया गया। रीति की यह धारणा इतनी बलवती थी कि कवियों/आचार्यों के मध्य इस बात पर भी विवाद होता था कि अमुक पंक्ति में कौन-सा अलंकार, रस, शब्दशक्ति या ध्वनि है। इन्हीं सब तत्त्वों या प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए उत्तर मध्यकाल का नामकरण 'रीतिकाल' के रूप में किया गया।

आधुनिक काल

आधुनिक युग और नवजागरण की चेतना—आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास के चतुर्थ कालखंड को गद्य की